रात्रि क्लास 24/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है? बच्चियाँ अभी जानती हैं हमारे जो भाई हैं; क्योंकि यह तो ज्ञान है वास्तव में हम सभी भाई–2 हैं। आत्माएँ अपने घर जावेंगी। अपनी रूहानी घर की याद रहती है। आत्माएँ ही घर जावेंगी। शरीर तो नहीं जावेंगे। वह है आत्माओं की दुनियाँ। बच्चों को मालूम है हम घर जाने वाले हैं। 84 का चक्र पूरा हुआ। यह बेहद के ड्रामा का चक्र फिरता ही रहता है। और कोई को मालूम नहीं है कि यह ड्रामा है। ..... तो तुम बच्चों की बुद्धि में यह याद रहनी चाहिए। किसको समझाना भी चाहिए। यह भी बच्चों को मालूम हुआ हमने 84 जन्म लिए हैं। 84 लाख कहने से तो जैसे समझ से बाहर चले जाते हैं। बाप को तो भूल जाने में जैसे यह बेसमझ बन पड़े हैं। बाप को तो कब भूलना न चाहिए। जो 84 जन्मों का वरसा देते हैं। तुम अभी कहेंगे बरोबर हम बाप को भूल गये हैं। अभी बाप खुद बैठ सिखलाते हैं। श्रीमत पर राजाओं का राजा तुम बनते हो। टीचर पढ़ाते हैं। तुम पढ़कर राजा बन जाते हो। फिर जितना मेहनत करेंगे अपन को राजाई का तिलक देते हो। गाड ने पढ़ाकर गॉड–गाडेस बनाया है। जो भी भारतवासी हैं ल0ना0 को भगवान भगवती कह देते हैं। तो भगवान और भगवती का कितना ऊँच पद है। अभी तुमको यही ताकत है। तुम झट समझेंगे यह तो कल्प2 बनते हैं। पढ़ाने वाला है भगवान। कृष्ण नहीं है। अभी मालूम हुआ है। यह सम्पूर्ण पवित्र हैं। इन्हों की महिमा गाई जाती है। अपनी आसुरी गुण उन्हों के आगे वर्णन करते हैं। 84 लाख सुना है तो अभी 84 जन्मों की बात बुद्धि में नहीं बैठती। तो बाप बैठ समझाते हैं। यह है श्री श्री श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। टीचर मत देते हैं ना। उन सभी को मत देने वाले हैं। उनको तो मत देने वाला कोई है नहीं। आगे पता न था हू इज हू। अभी झट बुद्धि में आ जावेगा। जो जानते हैं वही बतावेंगे। यहाँ भारत में जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो कितना लूटा। नहीं तो भारत कितना साहुकार था। निजाम का कितना नाम मशहूर है। वह सभी हैं मनुष्यों की साहुकारी। निजाम को 500 रानियाँ थीं। (हिस्ट्री) अभी तुमको बाप समझाते हैं हू इज हू। अर्थात् मैं कौन हूँ दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। हजार सूर्यों से तेजोमय कोई है नहीं। यह सभी सुनी–सुनाई बातें हैं। शास्त्रों में लिखा हुआ है ना तो वह बुद्धि में रहता है भगवान बहुत तेजोमय होगा। पढ़ा है, सुना है, तो समझते हैं हमको सा0 हो। तो कृष्ण को बैठ याद करते हमको दीदार हो। अच्छा हो भी जाता है दीदार, फिर प्राप्ति क्या? दीदार हुआ फिर क्या। फायदा क्या होगा? बाप समझाते हैं सा0 से कोई फायदा नहीं। यह बातें तो बहुत ही समझने की हैं। बाप से वरसा लेना तो सेकण्ड का काम है। बेहद का एक ही बाप शिवबाबा है। सभी कहते भी हैं हम भाई–2 हैं। चीनी हिन्दू भाई–2 अर्थ समझते नहीं हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं मैं तुम बच्चों को बेहद का बाप हूँ। तुम चैतन्य आत्माएँ हो भाई भाई। तुम जानते हो इस समय हम ट्रान्सफर होते हैं। तमोप्रधान से अभी सतोप्रधान बनते हो यह पढ़ाई है ना। वह जिस्मानी पढ़ाई कितने पढ़ते हैं। यह है बाप की रूहानी पढ़ाई जो एक ही बार तुम ही पढ़ते हो। अभी स्प्रीचुअल कॉन्फ्रेन्स अक्षर कहते हैं; परन्तु अर्थ का कुछ भी पता नहीं है। रूहानी नॉलेज किसके पास है जानते नहीं हैं। हमारे पास तो सारे शास्त्रों की नॉलेज है। बाप समझाते हैं मीठे–2 बच्चों रूहानी स्प्रीचुअल नॉलेज तो बाप द्वारा ही मिलती है। इस समय तुम आत्माओं को बाप से नालेज मिलती है। फिर 5000 वर्ष बाद चक्र रिपीट होना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने लिए योग सिखाया जाता है। बाप बैठ समझाते हैं तुम आत्माएँ भाई–2 हो। अभी मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुमको सृष्टि का चक्र समझाता हूँ। 84 का चक्र पूरा होगा फिर तुम्हारा ज्ञान बन्द हो जावेगा। फिर एक नम्बर से शुरू होगा। इस पढ़ाई को तुम जानते हो। ब्राह्मणों बिगर शूद्र बुद्धि पढ़ा न सके। अभी तुम जानते हो हम सो ब्राह्मण सर्वोत्तम कुल हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे। अभी हमको बाप पढ़ाते हैं। ईश्वर की सन्तान हैं। ईश्वर को भी यहाँ आना पड़ता है। बाप जो कुछ समझाते हैं, टाइम पास होता रहता है। इनको 5000 वर्ष हुआ है चक्र शुरू हुआ है। पहले2 सम्वत होगा फर्स्ट, फर्स्ट, फर्स्ट। बाप बैठ समझाते हैं पार्ट रिपीट फिर आत्माएँ करेंगी। जो जन्म जिस समय लिया है हूबहू रिपीट होगी। बाप

समझाते हैं यह भी ड्रामा अनुसार वार्तालाप चलता रहता है। अभी स्मृति आती है। बरोबर ऐसा चक्र और किसके पास निकल न सके। एक्युरेट कोई समझा न सके। तुम बच्चों की बुद्धि में नालेज है। अच्छा समझाने वाला अच्छा समझावेगा। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी समझते हो आत्मा एक बिन्दी है। उनमें सारी नॉलेज की धारणा होती है। जूँ मिसल चक्र फिरता रहता है। देखने में कुछ भी नहीं आती है। इस राज़ को दूसरा कोई मनुष्य नहीं जानते। तुम हो लक्की सितारे। जो भगवान आकर तुमको पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मेरे में सारा ज्ञान भरा हुआ है। तुमको श्रेष्ठ मत देते हैं। हीरे जैसा जन्म अभी वेस्ट मत करो। पढ़कर हीरे जैसा जन्म फिर से बनाओ। अच्छी ब्रेन कुमारियों की होती है। बाप कहते हैं बाप को जाना, अभी बाप की याद से ही आत्मा सतोप्रधान बनेगी। इस समय दुख है तब तो मनुष्य कहते हैं भगवान ने ऐसे क्यों बनाया। यह समझते नहीं यह तो अनादि बना हुआ ड्रामा है। सतयुग में कब मुख से ऐसे कहेंगे? वहाँ तो सुख ही सुख है। यहाँ तो घबड़ा जाते हैं। माया का वार होने से सभी भूल जाते हैं। कुछ देते इस दुनिया में तो दुख ही दुख है। सन्यासी जंगल में चले जाते हैं वहाँ भी कोई सुख थोड़े ही है। तुम बच्चे बहुत सुख देखते हो। यह दुख सुख का खेल है। ड्रामा का राज़ कोई भी सन्यासी उदासी नहीं जानते। यह नया ज्ञान है इसलिए खिट–2 होती है। धीरे–2 बुद्धि में आता रहेगा। तुम .... खुद अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। पढ़ाई कोई डिफीकल्ट नहीं है; परन्तु माया वार कर लेती है। अभी तुम बच्चे समझते हो यह सृष्टि अनादि अविनाशी है। बुद्धि में सारा चक्र याद है। 5000 वर्ष की सृष्टि है। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तो बुद्धि में कुछ आता ही नहीं। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।